सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

द्वारा स्वीकृत

मन्त्र तथा विधि निर्देशन सहित

दैनिक अग्निहोत्र

"स्वर्गकामो यजेत"

"नौर्ह वा एषा स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम्"

[माध्यन्दिन शतपथ ब्रा. 1:3:3:15]

स्वर्ग अर्थात् सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, पुत्र, पशु, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति तथा मोक्ष तक पहुँचाने वाली नौका अग्निहोत्र (यज्ञ) ही है। इस कारण स्वर्ग के अभिलाषी को यज्ञ करना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com **Website :** www.thearyasamaj.org

Online Book Reading : www.elibrary.thearyasamaj.org

Online Shopping : www.shop.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें और श्रेष्ठ बनें।

अथ अग्निहोत्रमन्त्राः

जल से आचमन करने के मन्त्र

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥ (इससे पहला आचमन)

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥ (इससे दूसरा आचमन)

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥ (इससे तीसरा आचमन)

जल से अङ्ग-स्पर्श करने के मन्त्र

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ॥ १ ॥ (इस मन्त्र से मुख)

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ २ ॥ (इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र)

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ ३ ॥ (इस मन्त्र से दोनों आँखें)

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ ४ ॥ (इस मन्त्र से दोनों कान)

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ ५ ॥ (इस मन्त्र से दोनों बाहु अर्थात् कंधे)

ओम् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु ॥ ६ ॥ (इस मन्त्र से दोनों जँघाएँ)

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ ७ ॥
(इस मन्त्र से शरीर के सभी अंगों पर जल का छिड़काव करें)

ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्र

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।

यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

दीपक जलाने का मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः ॥

यज्ञकुण्ड में अग्नि स्थापित करने का मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते संसृजेथामयं च ।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

घी में डूबी तीन समिधायें चढ़ाने के मन्त्र

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥१॥ (इस मन्त्र से पहली समिधा चढ़ायें)

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदन्न मम ॥२॥

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदस—इदन्न मम ॥३॥ (इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा चढ़ायें)

तन्त्वा समिद्भिरङ्ग्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्ग्गिरसे—इदन्न मम ॥४॥ (इस मन्त्र से तीसरी समिधा चढ़ायें)

घृत की पाँच आहुतियाँ

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्ववर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान्
प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥

जल-प्रसेचन की विधि एवं मन्त्र

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥ (दक्षिण से उत्तर की ओर जल छोड़ें)

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥ (इससे पश्चिम में, दक्षिण से उत्तर की ओर जल छोड़ें)

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥३॥ (पश्चिम से पूर्व की ओर जल छोड़ें)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥४॥

(इस पूरे मन्त्र का उच्चारण करने के बाद वेदी के चारों ओर ईशान कोण से आरम्भ करके ईशान कोण तक जल छोड़ें)

आघारावाज्याहुति एवं आज्यभागाहुति मन्त्र

ओम् अग्नये स्वाहा॥ इदमग्नये—इदन्न मम ॥१॥

(इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग में अपनी ओर से सामने तक सीधी धारा बनाते हुए घी डालें)

ओम् सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय—इदन्न मम ॥२॥

(इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में अपनी ओर से सामने तक सीधी धारा बनाते हुए घी डालें)

ओं प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥३॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय—इदन्न मम ॥४॥

(इन दोनों मन्त्रों से वेदी के मध्य भाग में दो आहुति देवें)

प्रात:कालीन यज्ञ के मन्त्र

(अब निम्नलिखित मन्त्रों से घी के साथ-साथ सामग्री की भी आहुतियाँ देनी चाहिए।)

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥३॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥४॥

सायंकालीन यज्ञ के मन्त्र

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥

ओम् अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

(निम्न मन्त्र को मन में बोलकर आहुति दें, केवल ओम् और स्वाहा का उच्चारण बोलकर करें)

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा॥४॥

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥ इदमग्नये प्राणाय—इदन्न मम ॥१॥

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽपानाय—इदन्न मम ॥२॥

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय व्यानाय—इदन्न मम॥३॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ॥

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदन्न मम ॥४॥

ओम् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥५॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।

तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥७॥

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

गायत्री-मन्त्र

(इस मन्त्र को तीन बार बोल कर तीन आहुतियाँ दें।)

ओं भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

पूर्णाहुति मन्त्र

(इस मन्त्र को तीन बार बोल कर तीन आहुतियाँ दें।)

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥

॥ इति अग्निहोत्रमन्त्राः ॥

यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए॥
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें॥
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चला कर, लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि सब करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नार की॥
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किए॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हा॥
हाथ जोड़ झुकाए मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप, करुणा आपकी सब पर रहे॥
पूजनीय प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए॥

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता तू॥
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥
ईश्वर हमारी बुद्धि को, वेद मार्ग पर चला॥

मंगल-कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण॥

हे ईश ! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी ।
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी॥
सब भद्र भाव देखें , सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ॥
हे ईश ! सब सुखी हों, कोई न हो दुःखारी।
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी॥
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

ओ३म् असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव, शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

जय-घोष

जो बोले सो अभय—सत्य सनातन वैदिक धर्म की—जय
बोलो धर्म-धुरन्धर महर्षि दयानन्द की—जय
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र की—जय
योगीराज श्री कृष्णचन्द्र महाराज की—जय
भारत माता की—जय
वैदिक ध्वनि — ओ...३...३...३...म्
(श्वास भरकर छोड़ते हुए लम्बे स्वर में बोलें)
इस ओ३म् से हमारा क्या नाता है? ऐसा जानें, मानें और बोलें:—
वैदिक अभिवादन — नमस्ते जी।